पीएचडी उपाधि हेतु शोध-पूर्व प्रस्तुति :

समकालीन हिंदी स्त्री-कविता : चिंतन के विविध आयाम (विशेष संदर्भ : 1990 से 2018 तक)

SAMKAALIN HINDI STRI KAVITA : CHINTAN KE VIVIDH AAYAAM
(VISHESH SANDARBH : 1990 SE 2018 TAK)

PRE-SUBMISSION SEMINAR PAPER

(सेमिनार प्रपत्र)

SESSION: 2017-2022

04.12.2021
शोध निर्देशक
डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय
अध्यक्ष, सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग

30.11.2021
शोधार्थी
कार्तिक कुमार राय
पंजीयन संख्या : R-17RS01110117
हिंदी विभाग

हिंदी विभाग
प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

समकालीन हिंदी स्त्री-कविता : चिंतन के विविध आयाम
(विशेष संदर्भ : 1990 से 2018 तक)

अध्याय विन्यास (chapterization) :

प्रथम अध्याय : स्त्री-कविता और स्त्री विमर्श

i. स्त्री-कविता : स्वरूप एवं आशय
ii. स्त्री-कविता में स्त्री का स्वरूप

द्वितीय अध्याय : हिंदी में स्त्री-कविता की परंपरा

i. हिंदी कविता में स्त्री-चिंतन
ii. स्त्री-कविता की ऐतिहासिकता और जातीय स्मृतियाँ
iii. वैश्वीकरण और स्त्री-कविता
iv. स्त्री-कविता की वैचारिकी

तृतीय अध्याय : समकालीन हिंदी स्त्री-कविता के विविध परिदृश्य

i. समकालीन व समकालीनता के मायने
ii. समकालीन स्त्री-कविता की प्रवृत्तियाँ
iii. स्त्री-कविता में आलोचकीय दृष्टिकोण
iv. स्त्री-कविता में स्त्री-दृष्टि

चतुर्थ अध्याय : अस्मितावादी विमर्श और स्त्री-कविता

i. स्त्री-कविता में सबाल्टर्न चिंतन
ii. स्त्री-कविता का आदिवासी स्वर
iii. स्त्री-कविता में स्थानीयता और लोकधर्मिता
iv. पुरुष वर्चस्ववाद, परिवार, विवाह और देह का सवाल
v. स्त्री-कविता का पुरुष स्वर
vi. स्त्री-कविता की प्रेम-संवेदना

पंचम अध्याय : स्त्री-कविता का भाषिक पक्ष

i. स्त्री-कविता की भाषा
ii. कविता में बिंब, रूपक और मिथक का प्रयोग

उपसंहार

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ सूची

वेबलिंक एवं अन्य संदर्भ / स्रोत

क्रम सं. / Sl. No.	अनुक्रम / Contents	पृष्ठ सं. / Page no.
1.	मुखपृष्ठ	--
2.	अध्याय विन्यास	1-2
3.	शोध-सार	3-20
4.	आधार ग्रंथ	21-23

शोध-सारांश

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में स्त्री रचनाशीलता की एक समृद्ध परंपरा रही है। प्रत्येक कालखंड में स्त्री रचनाशीलता के पुट मिले हैं लेकिन इतिहास लेखन की एकांगी व फुटकल पद्धति ने स्त्री रचनाकारों को यथोचित स्थान नहीं दिया। पितृसत्ता की सामाजिक जकड़न में स्त्री संबंधी चिंतन उपहास का विषय समझा जाता था। पराधीन हो या स्वाधीन भारत, राजतंत्र हो या लोकतंत्र, शास्त्र हो अथवा लोक आदि सभी स्थलों पर स्त्री-वर्ग की रचनात्मक सक्रियता व सामाजिक पक्षधरता निर्विवाद रूप से रही है। इतिहास में जो चंद नाम मिलते हैं उनके बगैर आगे बढ़ना मुश्किल था क्योंकि वे महीयसी रूप में उक्त एवं परवर्ती काल में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। हिंदी साहित्येतिहास में मीरा, महादेवी वर्मा व सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कालजयी कवयित्रियों के बिना हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा की समझ अधूरी है। इस प्रक्रिया में जितना संभव हो सका स्त्री रचनाशीलता को सायास-अनायास इतिहास से दरकिनार किया गया। विश्व युद्ध, वैश्विक क्रांति एवं आधुनिकता की बयार ने पूरे विश्व को प्रभावित किया। इस प्रक्रिया ने पूरे विश्व के स्त्री समुदाय को सबसे अधिक प्रभावित किया। दो-दो विश्व युद्धों ने पहली बार पितृसत्ता की जड़ों को हिला दिया वहीं दूसरी ओर आधुनिकता की लौ ने जड़ हो चुकी ज्ञान परंपरा को लचीला व सुलभ बनाया। इन संदर्भों ने कई मिथकों को एकसिरे से ख़ारिज कर मानवता को नयी तरह से परिभाषित किया।

वैश्विक पटल पर पहली बार स्त्री की अवस्थिति पर विचार किया गया। कई क्रांतियों और आंदोलनों ने स्त्री समुदाय को एक नयी पहचान दी। भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी इन स्त्री-केन्द्रित आंदोलनों का प्रभाव पड़ा। इस संदर्भ में भारतीय साहित्य के साथ-साथ विश्व साहित्य के नौवें दशक में अप्रत्याशित परिवर्तनों की अहम भूमिका रही। इसे केवल भूमंडलीकरण, उदारीकरण और नवीन अर्थनीति आदि संदर्भों से ही नहीं समझा जा सकता है बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाल होने के पश्चात यह पहला अवसर था जब पूरे विश्व की तथाकथित महाशक्तियों ने आपसी संवाद हेतु एक वैश्विक खुले मंच की स्थापना की। इस राजनीतिक-सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों में भारतीय उपमहाद्वीप अग्रणी भूमिका निभा रहा था। विभाजन की त्रासदी के पश्चात यह वह समय था जब रोजगार, शिक्षा, सामंती जकड़न से मुक्ति के लिए व्यापक स्तर पर विस्थापन हुआ। स्वदेश से विदेश, एक राज्य से दूसरे राज्य, गाँव से शहर आदि हर तरह के विस्थापन ने भारतीय जनमानस को, स्त्री-पुरुष संबंध को नये सिरे व नये मानकों पर परिभाषित किया। इसी समय स्त्री रचनाकारों का एक बड़ा हुजूम अपने अनुभूतित यथार्थ के साथ साहित्य की दुनिया में आता है। नौवें दशक में यह हुजूम अचानक ही नहीं आया बल्कि इसकी पृष्ठभूमि स्वतंत्रता संघर्ष के दौर से ही बनने लगी थी।

इतिहास में हुए उपेक्षा भाव व अपनी अस्मिता के प्रति सचेत कवयित्रियों ने अपनी दृष्टि की व्यापकता के प्रसार हेतु कविता, कहानी, उपन्यास व आत्मकथा आदि अन्य विधाओं का सहारा लिया। इस शोध में केवल स्त्रियों द्वारा रचित कविता के आधार पर ही उनके चिंतन के विभिन्न पक्षों को जानने-समझने की कोशिश हुई है।

इस शोध में कुल ग्यारह (11) कवयित्रियों (गगन गिल, कात्यायनी, अनामिका, सविता सिंह, शुभा, अनीता वर्मा, रंजना जायसवाल, नीलेश रघुवंशी, रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे और निर्मला पुतुल) को तथा इनके द्वारा रचित कुल चालीस (40) काव्य संग्रह एवं पाँच (5) काव्य-संकलनों को आधार ग्रंथ के रूप में लिया गया है। शोध की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए सन् 1990 से 2018 तक की समयावधि अर्थात् लगभग अट्ठाईस (28) वर्षों तक की अवधि को लिया गया है जिसे बीसवीं सदी का अंतिम दशक एवं इक्कीसवीं सदी के प्रथम दो दशक भी कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त शोध लेखन के दौरान प्रसंगवश अन्य महत्वपूर्ण कवयित्रियों पर भी अपेक्षित चर्चा की गयी है। उक्त अवधि में प्रकाशित काव्य-संग्रहों में स्त्री-चिंतन के साथ ही सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक-आर्थिक गतिविधियों पर एक सचेत स्त्री के पक्ष को जाना जा सकता है। लोकतांत्रिक परिवेश तथा संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों के बावजूद समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्रियों के जीवन को अपनी गिरफ़्त में बनाये रखा। समाज की वर्गीय तथा वर्ण-व्यवस्था के ढांचा ने इसे और भी विकराल बना दिया। तथाकथित मुख्यधारा की स्त्री हो या दलित वर्ग की या आदिवासी वर्ग की सभी वर्गों में पितृसत्ता की अमानुषिकता विभिन्न रूपों में हावी रही। इसमें संदेह नहीं कि दलित एवं आदिवासी वर्ग की स्त्रियाँ दोहरे-तिहरे शोषण की शिकार होती रही है। इस शोध में वर्गीय भिन्नता के साथ जातीय जकड़न में तड़प रही स्त्री की अंतर्कथाओं का वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। नौवें दशक में स्त्री-कवियों का एक बड़ा वर्ग साहित्य की दुनिया में हस्तक्षेप करता है। गगन गिल, कात्यायनी, अनामिका, सविता सिंह, शुभा, अनीता वर्मा, रंजना जायसवाल, नीलेश रघुवंशी, रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे और निर्मला पुतुल आदि उनमें से महत्वपूर्ण कवयित्रियाँ हैं। विभिन्न विमर्शों एवं अस्मिता आंदोलनों के दौर में इन स्त्री-कवियों के काव्य-संसार ने भाषा, कला, साहित्य, संस्कृति, परंपरा आदि के साथ ही दुनिया के विभिन्न ज्वलंत व हाशियाकृत मुद्दों को देखने का मौलिक दृष्टिकोण प्रदान किया है। शोध लेखन के दौरान इन चिंताओं से गुजरना हमें स्त्री-पुरुष संबंधों को समझने की एक नयी तालीम देता है।

अध्यायानुसार सारांश

प्रथम अध्याय : स्त्री-कविता और स्त्री विमर्श

इस अध्याय में स्त्री-कविता को परिभाषित करते हुए स्त्री विमर्श के विभिन्न पहलुओं की परिचयात्मक चर्चा की गयी है। स्त्री-कविता और स्त्री विमर्श के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया गया है। स्त्रीवादी कविताओं में अभिव्यक्त स्त्रीवाद की सैद्धांतिक चर्चा की गयी है। इस अध्याय को विस्तृत रूप में विश्लेषित करने हेतु दो उप-अध्यायों का सहारा लिया गया। ये दोनों उप-अध्याय 'स्त्री-कविता और स्त्री-विमर्श' के वृहत्तर परिप्रेक्ष्य को समग्रता में समझने में मदद करेंगे।

i. स्त्री-कविता : स्वरूप एवं आशय : इस उप-अध्याय में 'स्त्री-कविता' पदबंध को परिभाषित किया गया है। स्त्री-कविता पदबंध के संबंध में विभिन्न कवि एवं कवयित्रियों के उद्धरणों का प्रयोग किया गया है तथा उसके विश्लेषण का यथोचित प्रयास किया गया है। स्त्री-कविता पदबंध को परिभाषित करते हुए समकालीन साहित्य की धारा में स्त्री-कविता के महत्व को रेखांकित किया गया है। स्त्री-कविता पदबंध साहित्य जगत में नवीन प्रयोग है। अत: स्त्री-कविता के सन्दर्भ में इस नवीन पदबंध को तर्कसंगत ढंग से स्थापित करने की कोशिश की गयी है। स्त्री-कविता पदबंध ही क्यों ? इसे बताया गया है एवं स्त्री-कविता की रचना-प्रक्रिया से जुड़े महत्वपूर्ण पक्षों को बताने की कोशिश की गयी है। स्त्री-कविता में वर्णित नये अनुभव संसार एवं नवीन रचना-दृष्टि के महत्त्व को भी बताया गया है। विभिन्न कवयित्रियों के कविता संबंधी अवधारणाओं को रखना तथा उनकी रचना-प्रक्रिया से अवगत होना उक्त उप-अध्याय का उद्देश्य है।

स्त्रियों द्वारा रचित कविता को 'स्त्री-कविता' कहना अब लगभग रूढ़ हो गया है। इस शोध का संबंध स्त्री रचनाकारों द्वारा रचित कविता के संश्लेषण-विश्लेषण से है। प्रश्न उठता है कि 'स्त्री-कविता' पदबंध ही क्यों? जब हम साहित्य में स्त्री केन्द्रित रचनाओं को पढ़ते हैं, उस पर चिंतन-मनन करते हैं तो पाते हैं कि स्त्री की भूमिका समाज में प्रचलित पूर्वाग्रहों के अनुरूप ही होती है। जहाँ इस रूढ़ि को तोड़ा भी गया तो वह सहानुभूति मात्र बनकर रह गई है। इसके विपरीत जब हम स्त्री की स्वानुभूत अभिव्यक्ति पर आते हैं तो एक नयी दृष्टि, नया अनुभव संसार और न्याय की आस को पाते हैं। इस रूप में स्त्री विषयक कविता ही स्त्री-कविता है। स्त्री विषयकता को स्त्री के स्वानुभूत सत्य से ही जाना जा सकता है।

ii. स्त्री-कविता में स्त्री का स्वरूप : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता में निर्मित, अभिव्यक्त स्त्री बिंब अथवा स्त्री के स्वरुप की विशद चर्चा की गयी है। आज तक साहित्य में पुरुष निर्मित स्त्री बिंब ही प्रमुखता से वर्णित किया गया है जबकि स्वयं स्त्री का स्त्री के प्रति दृष्टिकोण पूर्णत: पुरुष निर्मित स्त्री बिंब से अलग है।

'मनुष्य' समझने और समझाने की अहिंसात्मक वैचारिक संघर्ष स्त्री-कविता की मूल आत्मा है। स्त्रियों द्वारा रचित उपलब्ध साहित्य में स्त्री के स्वरूप को समयानुसार परिवर्तित होता देखा जा सकता है। सुमन राजे ने अपने इतिहास 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' में स्त्री-कविता को नवजागरण के विभिन्न चरणों के रूप में देखा है। थेरी गाथा को उन्होंने प्रथम, संस्कृत और प्राकृत कवयित्रियों को द्वितीय तथा भक्ति-आंदोलन की कवयित्रियों को तृतीय नवजागरण की संज्ञा से अभिहित किया है। इन तीनों ही अभिव्यक्तियों का रचनाकाल अलग है। रचना के उद्देश्य भी भिन्न हैं लेकिन एक सूत्र जो उन्हें आपस में जोड़ती है वह है- आत्माभिव्यक्ति की ललक! थेरी गाथा स्त्री-मुक्ति का प्रथम सोपान है। यहाँ स्त्रियों की आत्माभिव्यक्ति, अपने परिवार, समाज द्वारा किए जा रहे शोषण-अन्याय से मुक्ति का है। संस्कृत और प्राकृत कवयित्रियों ने रचना के लिए स्थापित समृद्ध भाषा को चुना और विषय-वस्तु के रूप में भी उन्होंने अपने जीवनानुभव के साथ सामाजिक दुराचारों का चित्रण किया। भक्तिकाल में भी स्त्री-कविता के जो छिट-पुट रूप मिलते हैं उनमें भी स्त्री केंद्र में न होकर परिधि पर है। राजघराने से संबंधित कवयित्रियों ने कवियों की बनी बनाई परिपाटी का ही अनुसरण किया। एक रणनीति के तहत स्त्रियों ने कविता में बनी-बनायी परिपाटी का चित्रण किया और बीच-बीच में अपनी दशा के स्वरूप को अभिव्यक्त करती चली! अक्कमहादेवी, ललद्यद, मीरा, ताज आदि कवयित्रियों को क्रांतिधर्मी चेतना की वाहिका के रूप में देख सकते हैं।

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में अस्सी-नब्बे का दशक स्त्री-कविता के उद्भव व विकास के नज़रिये से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक प्रस्थान बिन्दु (Departure point) है जहाँ से स्त्री-कविता एक नया मोड़ लेती है। यहाँ पारंपरिक-सांस्कृतिक तथा धार्मिक खोल में पल रही स्त्री-छवि को एक धक्का स्त्री-रचनाकारों से मिलता है। एक स्त्री का लिखना क्यों मायने रखता है? इसका एक सामान्य उत्तर स्त्री-लेखन से पूर्व साहित्य में उनके अर्थ-छवियों में देखे जा सकते हैं जो मात्र एक प्रगल्भा, भोग्या या देवी आदि के ही रहे हैं। पुरुष-दृष्टि से निर्मित स्त्री बिंब स्त्री व्यक्तित्व के एकरेखीय स्वरूप को स्थापित करता है। स्त्री-लेखन ने स्त्री के असल रूप को निखारा और समाज के समक्ष रखा है।

द्वितीय अध्याय : हिंदी में स्त्री-कविता की परंपरा

इस अध्याय में हिंदी साहित्य की ओझल स्त्री-कविता के क्रमबद्ध विकास परंपरा को बताने का प्रयास किया गया है। हिंदी में स्त्री-कवियों की एक लम्बी परंपरा रही है। लेकिन पुरुषवादी सामाजिक संरचना ने स्त्री-कवियों एवं उनके साहित्य को इतिहास से बाहर रखा। इस अध्याय को विस्तृत रूप देने के लिए चार उप-अध्याय बनाये गये हैं। इन चारों ही उप-अध्यायों में हिंदी में स्त्री-कविता की परंपरा को साहित्य के विभिन्न संदर्भों से जोड़कर विश्लेषित किया गया है।

i. हिंदी कविता में स्त्री-चिंतन : इस उप-अध्याय में हिंदी साहित्येतिहास की काव्य-परंपरा में स्त्री-चिंतन के बिन्दुओं को उल्लेखित करना है। हिंदी काव्येतिहास में स्त्री-चिंतन दो रूपों में मिलता है : प्रथमत: पुरुष रचनाकारों द्वारा स्त्री-चिंतन तथा द्वितीय स्त्री रचनाकारों द्वारा स्त्री-चिंतन। इन दोनों ही काव्यधाराओं में स्त्री-चिंतन विषयक साम्य-वैषम्य के बिन्दुओं का भी विवेचन इस उप-अध्याय में किया गया है। हिंदी कविता में स्त्री-चिंतन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए साहित्य के विभिन्न कालखंड की रचनाओं में निहित स्त्री-बिंब के बदलते परिदृश्य की चर्चा की गयी है।

साहित्येतिहास की परंपरा में भाषा एवं साहित्य चिंतन का विकास मानवीय चिंतन व चेतना का भी विकास रहा है। स्त्री-पुरुष संबंधों की बारीकियाँ, प्रेम व परंपरा का द्वंद्व तथा सम्मान व समानता आदि में निरंतर होने वाले परिवर्तनों ने साहित्येतिहास के चिंतन को सदैव प्रभावित किया। वैज्ञानिक खोजों व उपलब्धियों ने हजारों वर्षों से चली आ रही मिथ को चुनौती देकर एक नयी दुनिया की आहट को स्थापित किया। विकास के इन प्रकरणों ने स्त्री संवर्ग को सबसे अधिक प्रभावित किया है और अब भी कर रहे हैं। ऐसा माना भी जाता है कि 'मानव सभ्यता का विकास स्त्री-जाति की पराधीनता का इतिहास भी है।' इस पराधीनता ने स्त्री-जाति के इतिहास को, उनकी चिंतनधारा को कालकोठरी में हमेशा के लिए दफ्न कर दिया। हिंदी हो अथवा अन्य भारतीय भाषाएं महिला लेखन को प्रायः दरकिनार करके ही इतिहास लिखा गया। हालांकि कई इतिहासकारों ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए साहित्येतिहास में महिला लेखन के संदर्भ एवं चिंतन को अग्रसारित किया है। ऐतिहासिक, सामाजिक घटनाक्रमों के परिवर्तन और धार्मिक-सांस्कृतिक नियामकों ने स्त्री-व्यक्तित्व को भले ही खंडित किया हो लेकिन प्रत्येक काल में स्त्री की सर्जनात्मकता ने अपने सामर्थ्य के अनुकूल उसका प्रतिरोध भी जताया है। इसके साथ ही पुरुष रचनाकारों द्वारा स्त्री संबंधी चिंतन के विभिन्न रूपों की शिनाख़्त ; हिंदी कविता की परंपरा में स्त्री-चिंतन को मुख्यतः

काल के परिप्रेक्ष्य में देखना एवं काल परिवर्तन के साथ उसके स्वरूप परिवर्तन को जानना; साहित्येतिहास की परंपरा में स्त्री की रचनाशीलता को समझना है।

ii. स्त्री-कविता की ऐतिहासिकता और जातीय स्मृतियाँ : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता में निहित ऐतिहासिकता एवं जातीय स्मृतियों को व्याख्यायित-विश्लेषित किया गया है साथ ही स्त्री-कविता की ऐतिहासिक महत्ता को भी रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। स्त्री-कविता में ऐतिहासिकता से पर्याय स्त्री के रचनात्मक कृतित्व, इतिहास में हुए उपेक्षा भाव तथा स्त्री की अस्मिता के इतिहास आदि से है। जातीय स्मृतियों का आशय स्त्री जाति मात्र के उत्थानवादी उपलब्धियों से है। यहाँ जातीय स्मृतियाँ वर्ण (Caste) का पर्याय न होकर समस्त स्त्री-जाति की सूचक है।

अपने पुरखिनों की सदाशयता से स्त्री-कवियों ने अपनी काव्याभिव्यक्ति को परिपाक किया है। नानी-दादी-चाची-बुआ-सास-ननद आदि दर्जनों पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों की रसोन्मत्त जातीय स्मृतियाँ उनके जीवन का महत्वपूर्ण अवलंब बनती हैं। जन्म से मृत्यु पर्यंत स्त्री-जीवन के विभिन्न विभीषिकाओं की रुपहली धूप-छांव को स्त्री-कवियों ने कथात्मक रूप दिया है। अपनी ऐतिहासिक एवं जातीय स्मृतियों के बोध द्वारा ही स्त्री-कविता ने स्त्री-व्यक्तित्व के अब तक के खंड-खंड रूप को एक साथ पिरोकर उसके अखंड रूप को जनमानस के समक्ष रखा है। बहनापा भाव से संसार भर की स्त्रियों से तादात्म्य स्थापित करती उनकी कविताएं निजता को सामाजिकता में बदलती चलती है। स्त्री-देह संबंधी धार्मिक-पौराणिक नियामकों पर भी स्त्री-कविता अपना एक स्पष्ट एजेंडा रखती है। आधुनिक शिक्षा-संस्कृति और जीवन मूल्यों में बदलाव के आलोक में ही इस परिवर्तन और स्त्री-कविता के स्थापत्य को समझा जा सकता है।

iii. वैश्वीकरण और स्त्री-कविता : इस उप-अध्याय का स्त्री-कविता के संदर्भ में खास महत्व है। नब्बे के दशक में वैश्वीकरण की अवधारणा ने पूरे विश्व को झकझोर दिया था। वैश्वीकरण के प्रभाव से भारी मात्रा में स्त्री-पुरुषों का रोजगार, शिक्षा आदि के लिए विस्थापन हुआ। स्त्रियों में शिक्षा-प्रसार की गति अपेक्षाकृत तीव्र हुई। अत: वैश्वीकरण और स्त्री-कविता के विभिन्न घटकों की विस्तृत चर्चा उक्त उप-अध्याय में की गयी है।

1960 के दशक में समाजशास्त्रियों द्वारा प्रयोग में लाया गया शब्द वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण व्यापक अर्थों में आठवें-नौवें दशक में विश्व के बड़े अर्थशास्त्रियों के लिए एक अर्थनीति बनकर उभरती है।

वैश्वीकरण की विस्तारवादी तथा कथित सुधारवादी नीतियों ने पूरे विश्व में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन की लहर को गति दी।

मुक्त व्यापार नीति ने देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्रों को प्रभावित किया। देश की आम जनता एक नागरिक से उपभोक्ता में बदल गयी। सम्पूर्ण विश्व की आधी आबादी को अवसर की सूरत में एक नये पूंजीवादी पितृसत्ता का उपनिवेश बना दिया गया। विचार के स्थान पर उसके शरीर और रूप-सौंदर्य को सराहा गया। नौवें दशक में स्त्री-कवियों का एक वर्ग इस दोहरी नीति को समझ रहा था। कात्यायनी, अनामिका, गगन गिल, अनीता वर्मा, नीलेश रघुवंशी आदि कवयित्रियों ने इस पूंजी केन्द्रित बजारवादी व्यवस्था की दुर्नीतियों के खिलाफ चिंता जाहिर की है।

iv. स्त्री-कविता की वैचारिकी : इस उप-अध्याय में समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-कविता की वैचारिकी को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। स्त्री-कविता की वैचारिकी से तात्पर्य स्त्री कवियों की कविता, साहित्य, कला संबंधी मंतव्यों एवं उनकी सामाजिक पक्षधरता से है।

नौवें दशक तक आते-आते समाजशास्त्र, मानविकी और वैज्ञानिक चेतना आदि के समवेत दृष्टि ने एकबार फिर मानव जीवन को नयी दिशाओं, तकनीकों से लैस किया और जिजीविषा की उत्कट व सौंदर्य भावना को संचारित किया। परिणामतः एक नये विश्व ग्राम-समाज की प्राक्कल्पना ने रूप लिया। सैकड़ों राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संधियों ने मनुष्यता को बचाये रखने का प्रकल्प वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया। राज्य, राष्ट्र और वैश्विक परिवर्तन के घटाटोपों के बीच अब स्त्रियों का एक बड़ा वर्ग इस प्रकल्प में शामिल होने लगा। स्त्रियों के शामिल होने पर पारिवारिक-सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर स्थितियाँ बदली। सामाजिकता की भावना का प्रसार अधिक हुआ और पुरुषों के समकक्ष आकर स्त्रियों ने अपने प्रज्ञामूलक सूत्र को नयी उड़ान दी। इसी अर्थ में स्त्री-लेखन अतीतग्रस्तता के बजाय आत्मविश्लेषण, आत्मालोचन एवं आत्मसंघर्ष पर बल देता है।

तृतीय अध्याय : समकालीन हिंदी स्त्री-कविता के विविध परिदृश्य

इस अध्याय में समकालीन हिंदी स्त्री-कवियों के सामाजिक-राजनैतिक तथा वैश्विक मुद्दों पर उनकी लेखनी, विचारधारा और पक्षधरता से जुड़े सवालों को विश्लेषित किया गया है। साहित्य अथवा राजनीति में स्त्री-वैचारिकी को सदैव उपेक्षित रखा गया। अत: स्त्री-कविताओं में अभिव्यक्त आत्माभिव्यक्ति महज कविता न होकर उनकी वैचारिक भूमि भी है। इसलिए इस अध्याय में स्त्री-कविता में आये अलग-अलग

परिदृश्यों की चर्चा की गयी है। इस अध्याय को भी चार उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। चारों उप-अध्याय अलग-अलग क्षेत्रों में स्त्री-कविता की उपस्थिति एवं महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं।

i. समकालीन व समकालीनता के मायने : हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में समकालीन या समकालीनता साहित्य के क्रमबद्ध विकास को समझने में सहायक सिद्ध हुई। समकालीन शब्द के विश्लेषण हेतु प्रायः परंपरा, आधुनिकता, तात्कालिकता, समसामयिकता, संस्कृति-प्रतिसंस्कृति एवं काल प्रवाह आदि शब्दों एवं उनके बीच अंतर्संबंधों की चर्चा होती रही है। साहित्य अथवा कला अपने काल से सदैव ही संपृक्त रही है और उस संपृक्ति के बावजूद अपने काल का अतिक्रमण करती है। कविता अथवा कोई भी कृति इसी अर्थ में कालजयी कहलाती है। अतः समकालीन कवि या कथाकार अपने समय में बद्ध रहकर भी समय से आगे की यात्रा करते हैं।

समकालीन स्त्री-कविता अपनी वैविध्यता, बहुकेन्द्रीयता और उदारमना दृष्टि के कारण ही हिंदी कविता की परंपरा में एक नयी पहचान बनाती है। आत्मान्वेषण और अपने स्व को विस्तृत आकार देती हुई स्त्री-कवियों ने परिवार, समाज-राष्ट्र और विश्व के विभिन्न प्रारूपों पर विचार प्रकट किये। अपने समय की चुनौतियों से टकराने का संवादधर्मी-प्रजतांत्रिक मॉडल स्त्री-कविता की समकालीनता की मौलिक पहचान है। भाषा, भाव एवं अवबोध के स्तर पर भी समकालीन स्त्री-कविता का स्थापत्य भिन्न है। समाज तथा व्यक्ति के मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म इकाई का विवरण स्त्री-कविता जिस तरह देती है उनमें विद्रोह और करुणा का सम्मिश्रण है। ‘राजनीतिक’, ‘घरेलू’, ‘आपबीती’, ‘जगबीती’, ‘विस्थापन’, ‘गंवई’, ‘शास्त्रीय’, ‘लौकिक’, ‘इतिहास’, ‘मिथक’, ‘घर’, ‘प्रेम’, ‘पर्यावरण’, ‘मृत्यु’, ‘यौन-हिंसा’, ‘भ्रूण-हत्या’, ‘अतीत’, वर्तमान’, ‘भविष्य’ तथा वर्ण-वर्ग-नस्लगत पीड़ाओं की दुरभिसंधियों को स्त्री-कवियों ने समवेत रूप से चिंतन के केंद्र में लाया है।

ii. समकालीन स्त्री-कविता की प्रवृत्तियाँ : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता की सामूहिक उपलब्धियों की विवरण देते हुए स्त्री-कविता के विभिन्न स्वरों की विस्तृत चर्चा की गयी है। समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-कविता निरंतर कुछ नया जोड़ रही है, इसे बताना तथा समाज के विभिन्न वर्गों के अनुभूत यथार्थ को सामने रखना इसका मुख्य ध्येय है। समकालीन स्त्री-कविता के जनसरोकार उन्मुखी पक्ष को बताना भी इस उप-अध्याय का मुख्य प्रयोजन है।

समकालीन हिंदी स्त्री-कविता के प्रबल हस्ताक्षरों में गगन गिल, अनामिका, कात्यायनी, रजनी तिलक, शुभा, सविता सिंह, नीलेश रघुवंशी, अनीता वर्मा, रंजना जायसवाल, निर्मला पुतुल आदि महत्वपूर्ण कवयित्रियाँ हैं। इन्होंने अपने समय की नब्ज को पहचानते हुए अस्मितामूलक संघर्ष की आवाज को बुलंद किया है। अपने समय के बहाने इन कवयित्रियों ने न सिर्फ अपनी गाथा को काव्यरूप दिया बल्कि समस्त स्त्री जाति के दंश को भी निर्भीकता से रखा है। इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्रियों की जहालत, स्थिति और अवस्थिति का अंकन हुआ है। यह भी ध्यातव्य हो कि यहाँ निरा वैयक्तिक दुःख अथवा रोना-धोना नहीं है बल्कि एक स्त्री के संपूर्ण विश्व के प्रति भाव, सोच व चिंतन की भी झलक है।

iii. स्त्री-कविता में आलोचकीय दृष्टिकोण : स्त्री-कविता पिछले तीन-चार दशकों से निरंतर अपना स्वरूप गढ़ रही है। स्त्री-कवियों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है। लेकिन स्त्री-कविता की आलोचना हेतु हिंदी काव्यालोचना में अभी आलोचकीय विवेक का अभाव सा दिखता है। पूर्व प्रचलित स्थापित काव्यालोचना के मानदंडों पर स्त्री-कविता की आलोचना करना स्त्री-कविता के साथ अन्याय करना होगा। अब तक की स्त्री-कविता संबंधी आलोचना इसी विवेकहीनता का शिकार होती आयी है। अत: स्त्री-कविता संबंधी विभिन्न आलोचकीय दृष्टिकोणों का परिचय देते हुए काव्यालोचन हेतु पृथक आलोचना विवेक को प्रस्तावित किया गया है।

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में स्त्री रचनाशीलता को उपेक्षित रखना एक ऐतिहासिक तथ्य है। लगभग सभी साहित्येतिहासकार अपने इतिहास ग्रंथ में स्त्री-रचनाकारों को स्थान देने एवं उनका साहित्यिक मूल्यांकन करने से कतराते रहे। पहली बार तीसरे सप्तक की कवयित्री और इतिहासकार सुमन राजे ने अपनी पुस्तक ‘हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास’ में स्त्री-रचनाशीलता की ऐतिहासिक विकास यात्रा को अखिल भारतीय स्तर पर लाने का प्रयास किया। इतिहासकार यह भी बताती हैं कि कैसे जेंडर संबंधी पूर्वग्रहों से ग्रस्त इतिहासकार और आलोचक स्त्री रचनाशीलता को त्याज्य समझते रहे। मीरा, दयाबाई-सहजोबाई, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि की अभिव्यक्ति का भी एक विशेष पुरुषवादी दृष्टि से ही मूल्यांकन किया गया। मीरा को भक्त कवयित्री तो महादेवी को वेदना, रहस्यवादी कहकर उनकी काव्याभिव्यक्ति के गूढ़ार्थ को सीमित दायरे में बांध दिया गया।

आधुनिकयुगीन आलोचना की एक अलग धारा ने जरूर मीरा-महादेवी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि की कविताओं को नयी काव्यदृष्टि से देखने का प्रयास किया लेकिन उनके मानक भी नवीन नहीं थे। स्त्री-लेखन में भी साहित्य जगत का वर्चस्ववादी रुझान इसी बात की अपेक्षा करता है कि उनमें पितृसत्ता-

धर्मसत्ता के अनुकूल ही सामग्री हो। उससे इतर होने पर या तो उसे साहित्येतिहास की कोटि से बाहर रखा जाएगा या उसे साहित्य का दर्जा प्राप्त नहीं होगा अथवा उसके लिए 'फुटकल खाते' या बट्टेखाते खोल लिए जायेंगे।

iv. स्त्री-कविता में स्त्री-दृष्टि : इस उप-अध्याय में स्त्री-दृष्टि का विवेचन किया गया है। सांसारिक अनुभवों एवं कला-साहित्य-संस्कृति-ज्ञान से संबंधित स्त्री-दृष्टि का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

समकालीन स्त्री-कवियों ने वैचारिक स्तर पर अपनी परिधि का विस्तार करते हुए स्त्री-दृष्टि की मौलिक अवधारणा को स्थापित किया है। स्त्री-कविता उन तमाम अछूते सवालों, संदर्भों अथवा प्रसंगों से अपने को जोड़ती है जो अब तक स्त्रियों के लिए वर्जित क्षेत्र समझे जाते थे या बनाये गए थे। औद्योगिक क्रांति, प्रेस का आगमन तथा वैज्ञानिक चेतना आदि के प्रभावों ने स्त्री-वर्ग को एक नयी स्फूर्ति दी। इस स्फूर्ति में शैक्षिक संवेदना की अहम् भूमिका थी। नौवें दशक में अचानक ही कार्यक्षेत्र में स्त्रियों का हुजूम नहीं उतरा था बल्कि इसकी पृष्ठभूमि स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान से ही बन रही थी। एक ओर समाज सुधारकों, स्वतंत्रता सेनानियों ने स्त्री-शक्ति को पहचाना और उन्हें धार्मिक-सामाजिक कुरीतियों से आजाद कराया तो दूसरी ओर स्त्रियों ने भी अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सचेत होकर समाज में अपनी पहचान को स्थापित किया। युद्ध-दंगा, जाति व नस्लगत भेदभाव, पर्यावरण संकट, मानवतावाद, अर्थनीति, विदेश नीति, राजनीति, भ्रष्टाचार, स्त्री-हिंसा, शिक्षा तथा संस्कृति आदि विषयों पर स्त्री-कवियों ने अपनी मौलिक दृष्टि का परिचय दिया। निश्चित रूप से उनका यह रुख समाज-राजनीति में बनी-बनायी धारणा से बिल्कुल अलग है। इतिहास, धार्मिक आख्यान, स्त्री संबंधी पौराणिक कथाओं, वेद-शास्त्र तथा अपने समकाल को स्त्री-कवियों ने नितांत एक नये रूपक में देखा, समझा है तथा उन प्रसंगों-कथाओं-पुराकथाओं-श्लोकों-मंत्रों आदि जिसमें स्त्री को वस्तु या पुरुष की अंकशायिनी आदि बताया गया, उन्हें प्रश्नांकित किया है।

गगन गिल, अनामिका, कात्यायनी आदि कवयित्रियों ने समकालीन कविता में ही नहीं अपितु पूरे साहित्यालोचना में नये मुहावरों को प्रतिष्ठित किया। उनकी कविता-भाषा-आलोचना संबंधी पदबंधों को आलोचकों ने साहित्य जगत में खूब भुनाया।

चतुर्थ अध्याय : अस्मितावादी विमर्श और स्त्री-कविता

इस अध्याय में स्त्री-कविता के अस्मितावादी पहलुओं पर चर्चा की गयी है। अस्मितावादी विमर्श की कविताएँ समाज व साहित्य के प्रत्येक परत को सूक्ष्मातिसूक्ष्म ढंग से अभिव्यक्त करती है। मुख्यधारा के

साथ-साथ हाशियाकृत समुदाय का स्वर भी यहाँ प्रमुखता से मुखरित हुआ है। साहित्य के क्षेत्र में ‘स्त्री-कविता’ पदबंध स्वयं ही स्त्री की अस्मिता का विमर्श है। अत: इस अध्याय में स्त्री के सामाजिक काव्यानुभव का विश्लेषण स्वतंत्र रूप में किया गया है। स्वतंत्र विश्लेषण हेतु इस अध्याय में छह उप-अध्याय रखे गए हैं जिसमें स्त्री-कविता के सामाजिक, राजनैतिक, वैश्विक तथा स्थानीय स्वरों की व्यापक चर्चा की गयी है।

i. स्त्री-कविता में सबाल्टर्न चिंतन : इस अध्याय में स्त्री-कविता के सबाल्टर्न चिंतन पर चर्चा की गयी है। सबाल्टर्न चिंतन नब्बे के दशक में मुख्य मुद्दे के रूप में उभर कर सामने आया। समाज के उपेक्षित, अल्पसंख्यक, दलित आदि वर्गों की आवाज व अधिकार का संघर्ष इस चिंतन के केन्द्रीय तत्व हैं। स्त्री-कविता में सबाल्टर्न चिंतन समाज में समता के उद्घोष का भी चिंतन है।

सबाल्टर्न चिंतन अथवा सबाल्टर्न अध्ययन के प्रस्तोता और प्रेरणास्रोत इटली के वाम चिंतक अंटोनियो ग्राम्शी का लेखन रहा है। भारतीय इतिहासकारों में मुख्य रूप से ‘रणजीत गुहा, शाहिद अमीन, दीपेश चक्रवर्ती, पार्थ चटर्जी, आशिष नंदी, ज्ञानेंद्र पांडे आदि इतिहासकारों ने इतिहास के अध्ययन तथा विश्लेषण के इस दृष्टिकोण को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अंतर्गत इतिहास का ‘नीचे से अध्ययन’ पर विशेष बल दिया गया’। सबाल्टर्न से पर्याय अभिजन-समूह से बाहर रहे या शासक समूह से पीड़ित-प्रताड़ित वंचित समुदाय- दलित, स्त्री, श्रमिक-किसान वर्ग, अल्पसंख्यक आदि के साथ वे सभी जातियाँ जो ऐतिहासिक उत्पीड़न की शिकार रही हैं, उनकी आवाज़ को- उनके ऐतिहासिक बलिदान को- उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक-आंचलिक चेतना आदि को रेखांकित करना है। लैंगिक एवं जातीय (cast) पूर्वाग्रहों की शिकार दलित स्त्री समाज की सबसे अंतिम पंक्ति में खड़ी उपनिवेश है।

दलित स्त्रीवादी विमर्श की काव्यात्मक अभिव्यक्ति रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे, रजत रानी मीनू, रजनी अनुरागी तथा अनीता भारती आदि कवयित्रियों में दिखाई देती है। स्त्री-कविता का दलित स्वर, दलित स्त्री समुदाय की आकांक्षा, चिंता तथा सपनों की बुनावट की कविता है। ब्राह्मणवादी मानसिकता के अतिरेक की छाया उनके वर्ग के पुरुषों में भी कूट-कूट कर भर गया है। अतः विषमता और घृणा की दोहरी यंत्रणा झेलती दलित स्त्री रचनाकार अपनी निजता, अपने अनुभव आदि को रचनात्मक प्रतिरोध देती नज़र आती हैं। स्त्री की कोई जाति नहीं होती है, वह चाहे किसी भी वर्ग में हो, उसका दलन-शोषण भिन्न-भिन्न रूपों में सामने आता है। दलित स्त्री कवयित्रियाँ इस बात को भली-भाँति जानती हैं इसलिए वे सवर्णवादी मानसिकता से ग्रस्त स्त्री को ललकारती या फटकारती नहीं है बल्कि संवाद की पेशकश करती हैं।

ii. स्त्री-कविता का आदिवासी स्वर : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता में अभिव्यक्त आदिवासी स्वर की चर्चा की गयी है। आदिवासी समुदाय व समाज का साहित्य जगत में पदार्पण साहित्य की कमी को पूरा करता है। साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास की अभिजात्यवादी व्याख्या ने समाज के अनगिनत तबके को गुमराह किया है। दलित, अल्पसंख्यक तथा आदिवासी तथाकथित इतिहास और संस्कृति में अपने मूल स्वरूप एवं गाथाओं को नहीं देख पाते हैं। उन्हें या तो गुलाम, दास के रूप में चित्रित किया गया अथवा असभ्य, कुरूप या असुर आदि के रूप में! आधुनिकता और शिक्षा की चेतना ने जब इन्हें सम्पन्न किया तो ये अपने इतिहास, अपनी संस्कृति के लिए संघर्ष करने लगे।

आदिवासी साहित्य हिंदी साहित्येतिहास के समक्ष सैकड़ों प्रश्न के साथ एक बड़े विमर्श का रूप धारण करता है। साहित्येतिहास में उनकी अनुपस्थिति उन्हें निराश करती है; थोड़ी बहुत जो उपस्थिति है वह उनकी जाति, उनकी संस्कृति का माखौल उड़ाता दिखता है, उनकी जाति की स्त्रियों को हृष्ट-पुष्ट संभोग के लिए उपयुक्त वस्तु के रूप में चित्रित करता है। विगत तीन-चार दशकों से यह समाज अपनी अस्मिता और जिजीविषा के साथ ही सम्मानजनक जीवन जीने के लिए लगातार संघर्षरत रहा है। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपनी जाति तथा अपने साहित्य के प्रति फैलाये गए पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिए अनेक आदिवासी-गैर आदिवासी लेखक कृतसंकल्प हुए हैं। रणेन्द्र, रामदयाल मुंडा, महादेव टोप्पो, रमणिका गुप्ता, निर्मला पुतुल, अनुज लुगुन, ग्रेस कुजूर तथा जसिन्ता केरकेटटा आदि ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने हिंदी साहित्येतिहास की धारा को आदिवासी जनजीवन व विमुक्त साहित्य से जोड़ने और उसे समृद्ध करने का काम किया है।

iii. स्त्री-कविता में स्थानीयता और लोकधर्मिता: इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता के विस्तृत फलक में आये स्थानीयता तथा लोकधर्मिता के तत्वों का अनुशीलन-परिशीलन करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक स्त्री-कवि का अपने लोक से गहरा जुड़ाव है। अपने परिवेश एवं लोक संस्कार को वे नि:संकोच भाव से कविता में प्रयोग करती हैं।

स्त्री-कवियों ने विरासत में मिली लोक-चेतना और स्थानीय सांस्कृतिक बोध के समंजन से कविता में एक महावृत्तांत के स्वरूप को गढ़ा है। लोकगीत तथा लोकाचार हमेशा से हमारे समाज की सांस्कृतिक चेतना का अहम हिस्सा रहा है। लोकधर्मिता के तत्व स्थानीय संस्कृति-भाषा-बोली तथा आचार-विचार आदि वर्षों से लोकमानस में व्याप्त रहे हैं। समकालीन स्त्री-कवियों ने अपनी कविताओं में अपने क्षेत्र की स्थानीय संस्कृति, स्थानीय भाषा के साथ-साथ स्थानीय परिवेश को एक नयी पहचान दी है। कविता में

स्थानीयता का महात्म्य समकालीन कविता की नवीन विशेषता है। अपने-अपने क्षेत्र में बसी लोकधर्मिता के तत्व को स्थानीय परिवेश से एकमेक कर स्त्री-कविता ने अपनी जड़ों को सींचने का काम किया है।

iv. पुरुष वर्चस्ववाद, परिवार, विवाह और देह का सवाल : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता में प्रयुक्त पुरुष वर्चस्ववाद की चुनौतियों एवं स्त्री-देह से संबंधित सवालों की पड़ताल की गयी है। पुरुष वर्चस्ववाद ने स्त्री को पूर्णत: उसकी देह में गुलाम बना दिया है। स्त्री-कविता इस गुलामी तंत्र और वर्चस्ववादी नीतियों का पर्दाफाश करती हुई उनके नीतियों पर प्रश्न खड़े करती है। इस उप-अध्याय में स्त्री-कवियों की कविताओं में परिवार, विवाह और यौनिकता संबंधी मुद्दों पर चर्चा की गयी है। परिवार, विवाह और यौनिकता ये तीनों ही ऐसे प्रत्यय हैं जिससे स्त्री-जीवन जन्म से ही अभिशप्त है। इन प्रत्ययों का संरक्षण पुरुषवादी मूल्यों से होता आया है। स्त्री का निजी दृष्टिकोण इसमें एक सिरे से गायब है। सामाजिक संरचना में परंपरा, धर्म, संस्कृति के साथ ही ये तीनों प्रत्यय भी स्त्री के गुलामी के उपकरण हैं। स्त्री-कवियों के लिए इन तीनों ही प्रत्यय का अर्थ वही नहीं है जो एक पुरुष के लिए है।

हिंदी पट्टी में स्त्री-शिक्षा व स्त्री-चेतना का बीजवपन देर से हुआ लेकिन उसके विकास की गति ने जल्द ही ज़ोर पकड़ लिया। इसलिए आधुनिक शिक्षा के प्रभाव में सतीप्रथा, बाल विवाह, डायन-दहन, विधवा विवाह अथवा उनके जीवन की समस्या, पर्दा प्रथा तथा बहुविवाह आदि कुरीतियों को समाज के लिए विध्वंसकारी समझा गया। स्त्री रचनाशीलता ने एक नयी स्त्री की स्थापना की, जो पुरुषवादी वर्चस्व को उन्हीं की नीतियों से मात दे सके। शिक्षा-रोजगार और संवैधानिक अधिकारों के साथ आर्थिक दौर की स्त्री-कवियों का संसार जिन किर्चियों-तिनकों और लताओं से बनता है उनमें इतिहास, आत्मकथ्य, स्त्री-देह का शोषण-दोहन तथा पारिवारिक बिछोह आदि का घुलामिला रूप ही छनकर आता है। इनमें स्त्री के प्रति इतनी आचार संहिताएं लागू की गयी कि इनसे ऊपर उठकर स्त्री के बारे में सोचना कठिन हो गया। इस क्रूरता को कई बार प्रेम व समर्पण का नाम भी दिया गया और अंततः पुरुषवर्चस्ववाद ने क्रूर प्रेम के सहारे स्त्री को उसकी देह व यौनिकता में कैद कर दिया।

v. स्त्री-कविता का पुरुष स्वर : नौवें दशक के उतरार्द्ध में हिंदी के पुरुष कवियों में स्त्री के प्रति कुछ ऐसा नज़रिया बनने लगा था जो समय और काल के साथ-साथ अब तक चली आ रही स्त्री के प्रति सहानुभूति भाव का अतिक्रमण करते हुए पितृसत्ता को सीधे संबोधित होते दिखता है। नौवें दशक में सक्रिय नक्सलवाद और वामपंथ की राजनीति में वैचारिक समर्थन देने वाले कवियों- गोरख पाण्डेय, आलोक धन्वा, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अदम गोंडवी, बल्ली सिंह चीमा, कुमार विकल, पंकज सिंह, मंगलेश

डबराल आदि की कविताओं से यह सफर शुरू होता है। केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, विनोद कुमार शुक्ल, अशोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले, भगवत रावत, ज्ञानेन्द्रपति, लीलाधर मंडलोई, राजेश जोशी, वीरेन डंगवाल, कुमार अंबुज, पवन करण, जितेन्द्र श्रीवास्तव, मदन कश्यप, उदय प्रकाश आदि कवियों ने स्त्री के प्रति अपनी भावनाओं को वह रूप दिया जिसकी लड़ाई स्त्री अपने लिए लड़ रही है। पितृसत्ता को चुनौती देते हुए इन कवियों ने सहानुभूति से ऊपर उठकर उन्हें अपने साथी के रूप देखा, समझा और कविता में इसे अभिव्यक्त किया। अपने भीतर स्थित स्त्री की काया को विस्तार देते हुए अधिकांश कवियों ने पुरुषवादी वृत्तियों को तोड़ा और स्त्री-दृष्टि से स्त्री-जीवन की व्यथा-कथा को कहने की कोशिश की है।

vi. स्त्री-कविता की प्रेम-संवेदना : 'मुझे प्रेम चाहिए, सारी दुनिया हो जिसमें' समकालीन स्त्री-कविता में प्रेम के जिस दर्शन का परिपाक हुआ है वह कमोबेश नीलेश रघुवंशी के इस काव्योक्ति में सन्निहित है। प्रेम में एकाधिकार व जिस्मानी हक की तुलना में सम्पूर्ण चर-अचर प्रकृति को अपनी संवेदना से पोषित करने का भाव ही स्त्री-कवियों ने व्यक्त किया है। स्त्री-कविता में प्रेम मानवीयता, आत्मीयता तथा सहृदयता के रूपक में बंध कर आता है। स्त्री-कवियों ने प्रेम को पुरुषवादी एकांगी-खंडित व्याख्याओं से निकालकर उसे विशुद्ध भावनागत रूप दिया है। समता, समभाव एवं समदृष्टि के नियामक पर उसे मनुष्यता का पर्याय बनाया है। प्रेम की व्यापकता एवं विराटता का बोध लगभग सभी स्त्री-कवियों ने अपनी कविताओं में किया है। इसके साथ ही स्त्री-कविता में उस प्रेम-भावधारा की भी अभिव्यक्ति शामिल है जिसे पितृसत्ता ने स्त्रियों के खिलाफ एक कोमल हथियार की तरह इस्तेमाल किया है।

सविता सिंह के शब्दों में कहें तो 'लाना मेरे लिए खुद को / जैसे चिड़िया लाती है तिनका संभाल कर'। प्रेम का यह शांत, धवल और उन्मुक्त स्वर प्रेम की नयी दिशा है। समाज की पुरुषवादी संरचना में प्रेम को किसी भी तरह की आलंकारिक ग्रंथियों से विमुक्त रखना उसके स्थापत्य को अधिक संवेदनशील, अधिक मानवीय और परिवर्तनकामी बनाता है।

पंचम अध्याय : स्त्री-कविता का भाषिक पक्ष

इस अध्याय में स्त्री-कविता के भाषिक पक्ष पर विचार-विमर्श किया गया है। एक नयी शब्द संपदा, भाषिक अनुभव तथा प्रतीकों-बिम्बों की एक नयी दुनिया स्त्री-कविता सदैव रच रही है। स्त्री-काव्यभाषा ही स्त्री-कविता में प्राणतत्व का संचार करती है। क्योंकि यहाँ भाषा में गर्जन-तर्जन के बजाय एक सुधारवादी, संवादधर्मी तथा समतामूलक मूल्यों आदि का महत्त्व है, जो एक-दूसरे को हीन या कमतर सिद्ध करने के

स्थान पर एक-दूसरे के अस्तित्त्व को बराबरी के भाव से स्वीकारती है। स्त्री काव्यभाषा के इन सभी विशिष्टताओं को उक्त अध्याय में तार्किक ढंग से विश्लेषित किया गया है।

i. स्त्री कविता की भाषा : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता के शिल्प पक्ष की विवेचना की गयी है। स्त्री-कविता की भाषा नये लोकमानस का दिग्दर्शन कराती है।

स्त्री-कविता एवं स्त्री-लेखन का मौलिक अहिंसक औज़ार है स्त्री-भाषा। सृजन की अनुगूँज को समेटती यह स्त्रियों के मनोलोक को नयी भाषिकी ऊर्जा से दिपित करती है। स्त्री-लेखन ने निःसंदेह एक नयी स्त्री-भाषा को जन्म दिया है। स्त्रियों द्वारा रचित साहित्य का भाषिक पक्ष अधिक लोकतांत्रिक और सामासिक है। स्त्री-भाषा की विशेषता है कि वह किसी जंजाल, नाटकीयता अथवा वक्रता या अलंकरण के भार से भाषा को बोझिल नहीं करती, सीधे-सीधे अपनी बात करती है! नकार या स्वीकार! 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोय'-एक का स्वीकार और सारी दुनिया का निषेध वाला भाव स्त्री-भाषा की पहचान है। स्त्री-कवियों की काव्य-भाषा पर गौर करें तो पाएंगे वह कई पगडंडियों को बनाती हुई एक बड़े मार्ग का निर्माण करती हैं। स्त्री-भाषा उसी बड़े मार्ग का द्योतक है। आदिकालीन अवस्था से स्त्रियों की शक्तियों का अजस्त्र स्त्रोत उनकी भाषा ही रही है। भाषा जिसका आधार ही संवाद है। भाषा में भाषण और नीरसता पितृसत्ता की देन है। इस भाषणधर्मिता के बरक्स स्त्री-भाषा, भाषा को उसके अधीनीकरण से मुक्त करने का प्रयाण भी है। पश्चिम में भी स्त्री लेखिकाओं, चिंतकों (लेवीस्त्रार्स, वर्जीनिया वुल्फ, फ्रेंच मनोवैज्ञानिक नैन्सी शोदोरोव आदि) ने स्त्री-लेखन में भाषा की विशिष्टता का रेखांकन किया है।

लोकगीत, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, पुराकथाओं के रसों का समाहार स्त्री-भाषा को संजीवनी देता है। जातीय स्मृतियों की अपरूप कथाएँ, मिथक, इतिहास आदि सभी मिलकर स्त्री-भाषा व कविता को एक ऐसा प्लैटफॉर्म देते हैं जहाँ सबको समान अधिकार है, कोई पदानुक्रम नहीं। एक समदृष्टि का भाव जिसे वे अपने संघर्ष की लड़ाई में औज़ार की तरह इस्तेमाल कर सकती हैं। स्त्री-कविता का यह नवीन अस्त्र ही सामाजिक न्याय और वैश्विक पटल पर उनकी नयी पहचान को प्रतिष्ठित करेगा। अपनी परंपरा-संस्कृति के पुनर्पाठ की ताकत भी इसमें सन्निहित है।

ii. कविता में बिंब, रूपक एवं मिथकों का प्रयोग : इस उप-अध्याय में स्त्री-कविता में प्रयुक्त बिंबों, रूपकों तथा मिथकों आदि का विश्लेषण किया गया है। स्त्री-कविता के अनुभव संसार में काव्यबिंब, रूपक तथा मिथकों का विशेष महत्त्व है। स्त्री-कविता अपनी प्रमाणिकता हेतु न सिर्फ नवीन बिंब, रूपक का प्रयोग

करती है बल्कि मिथकों के सहारे कविता की वाग्धारा को भी संपुष्ट करती है। स्त्री-कविता मिथकीय चरित्रों के रूढ़ अर्थ छवियों को भी अपने काव्य विवेक से नवीन मानस में परिवर्तित करती दिखती है। अर्थात् स्त्री-कविता जब सीता, सावित्री, माधवी आदि किसी भी मिथकीय अथवा जैविक चरित्र का काव्यांतरण करती है तो उसी सन्दर्भ में चित्रण नहीं करती जिसके लिए वे रूढ़ हैं। अपितु वे उन्हें आधुनिक सन्दर्भों से जोड़कर उसे एक प्रतिपक्ष के रूप में गढ़ती हैं।

स्त्री के अनुभव संसार में बिंब और रूपक उनके निजी भावों-आत्मगत तत्वों को व्यक्त करने में सहायक रहें है। स्त्री-जीवन में मिथक को पितृसत्तात्मक संरचना ने इस तरह एक-दूसरे का पर्याय बना दिया कि स्त्रियों को उन मिथकों से आज भी बाहर निकालना मुश्किल है। स्त्री को कोमलांगी, सौंदर्य की प्रतिमूर्ति, माया-छलना, देवी-दासी, कामिनी-यामिनी आदि सैकड़ों अलंकरणों से अलंकृत करने का श्रेय मिथकों को ही है। स्त्री-लेखन इन तमाम रूढ़िवादी- पुरुषोचित्त कुप्रथाओं- कुप्रवृत्तियों को धत्ता बताते हुए अपने मानवी स्वरूप को घोषित करती है। मध्ययुग की मीरा हो या आधुनिक युग की महादेवी, सुभद्रा कुमारी चौहान या उनके परवर्ती स्त्री कवियों ने जिन बिंबों, रूपकों और मिथकों का प्रयोग किया वह उनके आत्माभिव्यक्ति के साथ-साथ समाज में निहित पुंसवादी कुटिलताओं के प्रति प्रतिरोध को भी दर्शाता है। लोकविश्वास और लोककथाएँ भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्त्रियाँ और बच्चे सदैव ही रूपकों में अपनी बातें कहते रहे हैं। आमजन भले ही देर से समझे लेकिन उनके संकेतों, आशंकाओं को अंततोगत्वा स्वीकार करना होता है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध में हिंदी कविता की परंपरा में स्त्री-कविता के साहित्यिक अवदान एवं चिंतन को क्रमबद्ध रूप में संयोजित किया गया है। स्त्रियों द्वारा रचित कविता को ही 'स्त्री-कविता' कहा गया है। स्त्री-कविता पदबंध नवीन काव्य-दृष्टि का द्योतक है। समकालीन मुद्दों, चुनौतियों और वैश्विक घटनाओं के प्रति एक सचेत स्त्री के रुख को जानना एक नवीन जीवन दर्शन को जानना है। नौवें दशक के बाद उभरी स्त्री-कवियों ने अपनी कविताओं के जरिये समाज में व्याप्त धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष संबंधी पुरुषवादी प्रपत्तियों को न सिर्फ प्रश्नांकित किया बल्कि उन विषय-संदर्भों पर अपनी मौलिक दृष्टि का परिचय भी दिया है। साहित्य और इतिहास में हुए उपेक्षा भावों का रचनात्मक प्रतिरोध स्त्री-कविता का मूल लक्ष्य है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपने अधिकारों को आत्मसात करती स्त्री-कवियों ने अपने अलिखित-अवर्णित ऐतिहासिक-सामाजिक विरासत को भी एक नयी पहचान दी है। समाज के वर्गगत व वर्णगत ढांचे ने स्त्रियों को दलितों में भी दलित अर्थात पूर्णतः हाशियाकृत बनाये रखा। ऐसे में दलित स्त्री की स्थिति और भी भयावह दिखती है। स्त्री-लेखन

उन तमाम अनछुए सवालों से टकराती है जो उसे एक मनुष्य होने की पदवी से च्युत करता है। धार्मिक-सामाजिक जड़ीभूत रूढ़ियाँ हो या पितृसत्तात्मक रणनीतियाँ अथवा आधुनिक बाजारवादी नीतियों के दोहरे-तिहरे शोषण के जंजाल के बीच स्वयं के आत्मन् (Self) को अभिव्यक्त करना और उन दुरभिसंधियों से बच निकलना आसान नहीं है। लेकिन शिक्षा का प्रसार, वैज्ञानिक चिंतन और वैश्विक क्रांतियों की उपादेयता से सीख लेती हुई कवयित्रियाँ बहनापा भाव से संसार भर की स्त्रियों से जुड़ती हैं। इस उपक्रम में कविता उनकी सखी भाव की साक्षी बनती है।

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-कवियों की आत्माभिव्यक्ति कविता के एक नये सौंदर्यलोक को स्थापित करती है। स्त्री-कविता महज साहित्य की एक विधा भर नहीं है बल्कि वह सामाजिक गतिविधियों का दस्तावेज़ भी है जिसे स्त्री-जीवन के आलोक में देखें जाने की जरूरत है। समकालीन स्त्री-कविता का स्वर विविधरंगी होने के साथ ही सर्वसमावेशी भी है। गगन गिल, कात्यायनी, अनामिका, सविता सिंह, शुभा, अनीता वर्मा, नीलेश रघुवंशी, रंजना जायसवाल, रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे, निर्मला पुतुल, वंदना टेटे आदि कवयित्रियों का काव्य-संसार जीवन के उस अध्याय का रूपक है जिसे आज तक हमसे दूर रखा गया। एक ऐसी दृष्टि जो मनुष्य जाति की विकास यात्रा व उपलब्धियों को संदेह के घेरे में ला खड़ा करती है। परिवार-समाज तथा राष्ट्र में स्त्री की अवस्थिति, उनकी नियति इन कविताओं में साफ झलकती है। समाज की अलग-अलग सरणियों की जीवटता, क्रूरता, सौंदर्य आदि सभी वृत्तियाँ इन कविताओं के लोक को आधुनिकता और परंपरा के द्वंद्व से बाहर निकालती है और उन्हें एक प्रजातांत्रिक स्वरूप देती है। स्त्री समुदाय की आशा, आकांक्षा व अस्मिता संबंधी विमर्शों को नयी रोशनी देती हुई इन कवयित्रियों ने पुरुषत्व और स्त्री-पुरुष संबंधों को एक नवीन भाष्य दिया है। कविता के साथ-साथ अपने विचारपरक निबंधों में इनका चिंतन देहरी से वैश्विक पटल पर चल रही चिंताओं को भी अपने केंद्र में लाती है। देह से जुड़ी गुत्थियाँ, प्रेम और प्रकृति का स्वच्छंद राग तथा पुरुषवादी खेमे में बद्ध स्त्री के स्वत्वबोध को स्त्री-कविता अलग-अलग कलेवर एवं भाषिक विन्यासों में व्यक्त कर रही हैं।

स्त्री-कविता का अस्मितामूलक विमर्शों से गहरा सरोकार है। स्त्री-कविता का दलित, आदिवासी अथवा अल्पसंख्यक स्वर इसकी आधारशिला को मजबूती प्रदान करता है। समाज का प्रत्येक हाशियाकृत वर्ग विषमता, असमानता और भेदभाव को अलग-अलग रूपों में झेलता है ; कहीं वह जातीय उत्पीड़न, कहीं आर्थिक विपन्नता तो कहीं वह लैंगिक पूर्वग्रहों के रूप में सामने आता है। समाज का तथाकथित बौद्धिक वर्ग हो या सामान्य वर्ग लैंगिक पूर्वग्रहों से ग्रस्त टिप्पणियाँ उनके जीवन का अहम हिस्सा है। स्त्री

के देहाधारित वर्जनाएं अधिकांश पुरुष वर्ग में कूट-कूट कर भरी हुई है। कई बार इन प्रक्षिप्त वर्जनाओं की शिकार स्त्री स्वयं भी बनती दिखती हैं। पुरुषवादी आग्रहों से आछन्न स्त्री उन बेड़ियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती है। इसी अर्थ में स्त्रीवादी कविताएं स्वयं स्त्री समुदाय के लिए भी आत्मालोचन व आत्मावलोकन की एक आधारशिला को सिरजती है। भाषा का मनोछंद भी यहाँ पारंपरिक भाषा के आस्वाद से भिन्न है। स्त्री-कवियों की भाषा विषयक चिंतन व प्रयोग दोनों ही कविता को स्त्री व्यक्तित्व का पर्याय बनाती है। स्वतंत्रता, सहजता और स्वाभाविकता उसका प्राणतत्त्व है। भाषा में मातृमना दृष्टि का समावेश उसे एक अलग ताकत देता है। प्रेम की थपकन ही प्रतिरोध का आधार बनती है तथा हृदय परिवर्तन की आस जगाती है। स्त्री-कविता ने स्त्री-भाषा के सहारे भाषा के सेंस (Sense) को परिवर्तित किया है। भाषा में सेंस से आशय है आदेशमूलक, भाषणधर्मिता, स्त्री-द्वेष आदि वृत्तियों के स्थान पर पदानुक्रममुक्त संवादधर्मी सरल, सहज आत्मिकता का स्वीकार ; जो उन्हें जातीय स्मृतियों के मनोलोक से अनायास ही प्राप्त हो जाता है। भाषा वैज्ञानिक जिसे 'सिमियोटिक' पदबंध से अभिहित करते हैं। लोक साहित्य उन्हीं जातीय स्मृतियों का सृजनात्मक प्रतिफलन है। इस तरह स्त्री-कविता की भाषा स्त्री-कविता के मूल्यांकन का एक शास्त्र भी है। अतः स्त्री-कविता भाषा, भाव और नवीन चेतना के सहारे निरंतर समाज को सुंदर बनाने का प्रयत्न कर रही है।

आधार ग्रंथ :

1. अनामिका (संपा.), *कवि ने कहा अनामिका चुनी हुई कविताएं*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, संस्करण : 2011
2. अनामिका (संपा.), *बीसवीं सदी का हिंदी महिला-लेखन खंड-2*, नयी दिल्ली : साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण : 2015
3. अनामिका, *खुरदुरी हथेलियाँ*, दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरा संस्करण : 2019
4. अनामिका, *एक कस्बाई लड़की की डायरी*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
5. अनामिका, *समय के शहर में*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
6. अनामिका, *बीजाक्षर*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
7. अनामिका, *अनुष्टुप*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
8. अनामिका, *कविता में औरत*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
9. अनामिका, *दूब-धान*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2019
10. अनामिका, *पानी को सब याद था*, नयी दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स, पहला संस्करण : 2019
11. अनीता वर्मा, *एक जन्म में सब*, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण : 2003
12. अनीता वर्मा, *रोशनी के रास्ते पर*, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण : 2008
13. कात्यायनी, *राख-अँधेरे की बारिश में*, लखनऊ : परिकल्पना प्रकाशन, प्रथम संस्करण : जनवरी 2004
14. कात्यायनी, *फुटपाथ पर कुर्सी*, लखनऊ : परिकल्पना प्रकाशन, प्रथम संस्करण : जनवरी 2006
15. कात्यायनी, *इस पौरुषपूर्ण समय में*, लखनऊ : परिकल्पना प्रकाशन, दूसरा संस्करण : जनवरी 2008
16. कात्यायनी, *कवि ने कहा चुनी हुई कविताएं*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, प्रथम पेपरबैक संस्करण : 2012
17. कात्यायनी, *जादू नहीं कविता*, लखनऊ : परिकल्पना प्रकाशन, पहला पुनर्मुद्रण : सितंबर 2019
18. कात्यायनी, *सात भाइयों के बीच चम्पा*, लखनऊ : परिकल्पना प्रकाशन, पहला पुनर्मुद्रण : सितंबर 2019
19. गगन गिल, *एक दिन लौटेगी लड़की*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम (वाणी) संस्करण : 2017
20. गगन गिल, *यह आकांक्षा समय नहीं*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम (वाणी) संस्करण : 2017

21. गगन गिल, *थपक थपक दिल थपक थपक*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम (वाणी) संस्करण : 2017
22. गगन गिल, *अँधेरे में बुद्ध*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम (वाणी) संस्करण : 2018
23. निर्मला पुतुल, *नगाड़े की तरह बजते शब्द*, नयी दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, पहला सजिल्द संस्करण : 2005
24. निर्मला पुतुल, *बेघर सपने*, पंचकूला (हरियाणा) : आधार प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2014
25. नीलेश रघुवंशी, *पानी का स्वाद*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2004
26. नीलेश रघुवंशी, *अंतिम पंक्ति में*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2008
27. नीलेश रघुवंशी, *घर-निकासी*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, पेपरबैक संस्करण : 2009
28. नीलेश रघुवंशी (संपा.), *कवि ने कहा चुनी हुई कविताएं*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, प्रथम पेपरबैक संस्करण : 2016
29. नीलेश रघुवंशी, *खिड़की खुलने के बाद*, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2017
30. शुभा कविताकोश
31. सविता सिंह, *अपने जैसा जीवन*, नयी दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, दूसरी आवृत्ति : 2013
32. सविता सिंह, *नींद थी और रात थी*, नयी दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, दूसरा संस्करण : 2019
33. सविता सिंह, *स्वप्न समय*, नयी दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण : 2013
34. सुशीला टाकभौरे, *मेरे काव्य संग्रह स्वाति बूंद और खारे मोती हमारे हिस्से का सूरज*, नयी दिल्ली : स्वराज प्रकाशन, द्वितीय संस्करण : 2014
35. सुशीला टाकभौरे, *मेरे काव्य-संग्रह यह तुम भी जानो तुमने उसे कब पहचाना,* नयी दिल्ली : स्वराज प्रकाशन, द्वितीय संस्करण : 2013
36. रजनी तिलक, *पदचाप,* दिल्ली : निधि बुक्स,संस्करण : 2006
37. रजनी तिलक, *हवा सी बेचैन युवतियाँ*, नयी दिल्ली : स्वराज प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2014
38. रंजना जायसवाल, *मछलियाँ देखती हैं सपने*, वाराणसी : लोकायत प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2002
39. रंजना जायसवाल, *दुख पतंग*, इलाहाबाद : अनामिका प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2007
40. रंजना जायसवाल, *ज़िंदगी के कागज़ पर*, दिल्ली : शिल्पायन, संस्करण : 2009
41. रंजना जायसवाल, *जब मैं स्त्री हूँ*, दिल्ली : नयी किताब, प्रथम संस्करण : 2009
42. रंजना जायसवाल, *सिर्फ़ कागज़ पर नहीं*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2012

43. रंजना जायसवाल, *क्रांति है प्रेम*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2015

44. रंजना जायसवाल, *स्त्री है प्रकृति*, जयपुर : बोधि प्रकाशन, प्रथम संस्करण : जून 2018

45. रमणिका गुप्ता (संपा.), *कलम को तीर होने दो (झारखंड के आदिवासी हिन्दी कवि)*, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2015

46. वंदना टेटे (संपा.), *कवि मन जनी मन आदिवासी स्त्री कविताएं* , दिल्ली : राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पहला संस्करण : 2019

सधन्यवाद

कार्तिक कुमार राय

शोधार्थी

पंजीयन संख्या : R-17RS01110117